RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-02
Issue-12
December-2017

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com

साहित्य में मिथक की अवधारणा

डॉ.अशोक कुमार
उच्च माध्यमिक शिक्षक

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 31 December 2017

Keywords
प्राचीनतम साहित्य, मिथ , मिथक , माइथॉस, बिम्ब- योजना, प्रतीक विधान

ABSTRACT

भारत के प्राचीनतम साहित्य में ज्ञान का भंडार छुपा हुआ है | हमारे देश में जो पहले था वह अब नहीं है |लेकिन जब प्राचीन परंपरा एवं साहित्य की बातें सामने आती हैं तो कुछ आलोचना-प्रत्यालोचना के बाद उसे कभी स्वीकारा जाता है तो कभी नकारा भी जाता है | आज के भौतिकवादी युग में हमारा समाज उसी बात को स्वीकार करता है जो उसके सामने या उसकी जानकारी में घट रहा होता है | जिन तथ्यों से हमारा सामना नहीं हुआ है उसे हम काल्पनिक कहकर नकार देते हैं | ऐसे ही तथ्यों को साहित्य में पौराणिक या मिथ अथवा मिथक नाम दे दिया जाता है |

मिथ शब्द वस्तुतः यूनानी भाषा के माइथॉस शब्द से निर्मित है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है -आप्त कथन या अतर्क्य कथन | आप्त कथन का अर्थ होता है प्रामाणिक और मान्य व्यक्ति की ऐसी बात जिसे समाज का प्रत्येक व्यक्ति बिना किसी संदेह या विरोध के मान ले |अतर्क्य कथन का भी यही आशय है कि जिस कथन के विरोध में तर्क नहीं दिया जाए | मिथक के संबंध में अभी जो धारणा है उसमें इस अर्थ की सत्ता स्थापित होते हुए जमाने तक में धार्मिक कर्मकांड की भांति जीवन की सार्वभौमिकता की पहचान विभूति तथा मानव एवं प्रकृति के एकत्व की भावना निहित रहती है | सत्य दर्शन के उन समस्त रूपों का एक नाम है जो अनुभव और तर्क से परे हैं तथा जिनको प्रयोग और प्रमाण से सिद्ध नहीं किया जा सकता |

हिंदी में प्रचलित मिथक शब्द अंग्रेजी की उम्मीद और संस्कृत के अमित शब्द के साथ को प्रत्यय जोड़ने से बना है हिंदी में इसका प्रचलन आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने अधिक लोकप्रिय बनाया एक लोककथा है वह मनुष्य के विकास की कहानी कहता है इसे बचा का मूल लोककथा में ही निहित है | वास्तव में जिन घटनाओं को कपोल कल्पित कहा जाता है उन्होंने उन्हें करोड़ों वर्ष पहले कुछ लोगों ने एक साथ जेली होगी उदाहरण के लिए फुले उसके बाद पुनः सृष्टि की रचना को लिया जा सकता है इन सारी बातों का चित्रण पराया सभी देशों के साहित्य में लगभग इसी प्रकार से किया गया है चौधरी महाद्वीपों की भौगोलिक लगता के साथ-साथ उनकी प्राकृतिक वस्तुओं से समझौता करते हुए सभ्यता संस्कृति आदि सभी कुछ अलग होता गया और मित्रों का स्वरूप भी परस्पर बदलता गया वेद उपनिषद रामायण महाभारत पुराण आदि ग्रंथों के मित्रों को आज के 50 वर्ष पूर्व तक आपने कहा जाता रहा लेकिन रथ विभाग की खोजों के पश्चात इनकी सत्यता प्रमाणित हो गई है |1956 ई. हस्तिनापुर की खुदाई में निकले पांडवों के पांचवे वंशज निश्चित रूप से युवक के खंडहर मिले उन खंडहरों ने पुराणों में अंकित हस्तिनापुर पर विधियों के आक्रमण था गंगा की बाढ़ को सिद्ध कर दिखाया |^1

यह सर्वविदित है कि किसी जाति की सांस्कृतिक परंपरा जिन वस्तुओं से इन तत्वों से समृद्ध होती है उनमें मिथक एक बहुत बड़ी भूमिका अदा करते हैं |जो जाति दरिद्र होगी उसके पास पुरा कथा नहीं होगी और पुरा कथाओं के आधार पर निर्मित होने वाले वाद्य नृत्य नहीं होंगे ,नाट्य-साहित्य नहीं होगा, महाकाव्य नहीं होगा और संगीत नहीं होगा | डॉ. नामवर सिंह के शब्दों में " प्राय:आप पाएंगे कि ऐसी जातियाँ मूर्ति और चित्र ही नहीं अनेक ललित कलाओं से विपन्न है और नितांत वैज्ञानिक समझी जाने वाली तर्क पर आश्रित जातियां कई दृष्टि से विपन्न और दरिद्र भी कही जा सकती है | ^2

मिथक को परिभाषित करना इतना आसान नहीं | विद्वानों ने मिथकीय अवधारणा को दो दृष्टियों से देखा है एक इसे विमूढ़ता या अंधविश्वास कहते हैं दूसरे प्रतीकात्मक या रूपकात्मक मानकर इसकी धार्मिक , दार्शनिक अथवा अन्य व्याख्याएं करते हैं | पाश्चात्य देश मिथक को प्राय: रुपकात्मक मानते हैं | भारत में भी कुछ विद्वान मिथक को बुद्धि की कसौटी पर परखने तथा रेशनेलाइज करने का आग्रह करते हैं, वह इसकी अध्यात्मिक अथवा बौद्धिक व्याख्या करते हैं | उनके विचार में यदि मिथक का अस्तित्व ना

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

होता तो काव्य और कलाएं भी नीरस ही रहतीं | रचनाकार की अभिव्यक्ति क्षमता सीमित होती है | कल्पना का क्षेत्र कभी-कभी इतना विस्तृत और व्यापक हो जाता है कि भाषा के समान उपकरण सब प्रकार की कल्पना ओं को व्यक्त नहीं कर सकते | तब रचनाकार का ध्यान एक ऐसे अतीत उपकरण की ओर जाता है जो मिथक के रूप उसकी कल्पना को मूर्तिमान कर सके | मिथक और कल्पना से निर्मित यह अभिव्यक्ति पाठक को भी अधिक आनंददायी प्रतीत होती है | इस प्रकार कहा जा सकता है कि संप्रेषण की सार्थकता में मिथक का महत्वपूर्ण योगदान होता है |

आदिम संस्कृति में पुरा ण एक अपरिहार्य प्रयोजन को सिद्ध करता है | यह विश्वासों को व्य क्त करता हु आ उन्हें सं वर्द्धित और नि यमित करता है | डॉ. श्यामाचरण दुबे ने अपने ग्रंथ 'लोकविश्वास और संस्कृति ' में स्वीकार किया है कि व्यक्तिगत तथा सामाजिक आधार पर प्रतीक तथा मिथक बनते हैं | पौराणिक मिथकों का प्रतीकों से घनिष्ठ संबंध है |पौराणिक मिथक ज ब प्रतीक के रूप में प्रयुक्त होते हैं तब उनमें ला क्षणिकता का समावेश हो जाता है | स्वच्छंदतावादी काव्य में पौराणिक प्रतीक एक नवीन उदात्त भूमिका लेकर प्रयुक्त हुए हैं |

नरेश मेहता ने अपनी रचना 'संशय की एक रात' धर्मवीर भारती ने 'अंधायुग', दुष्यंत कुमार ने 'एक कंठ विषपायी ' और कुंवर नारायण ने 'आत्मजयी' में वैदिक मिथकों का भरपूर प्रयोग किया है | इन रचनाओं में कभी के समकालीन युग की केंद्रीय समस्या समानांतर चलती रहती है कुंवर नारायण की रचना 'आत्मजयी ' में नचिकेता की उपनिषद कथा एकदम समानांतर रचना का इतिवृत्त चलता है | जो समस्या कवि की है वही नचिकेता की थी | यानी मृत्यु के बाद जीवन शक्ति की तलाश | यह मिथक उपनिषद पर आधारित तो है लेकिन क वि नहीं चाहता कि पाठक नचिकेता के औपनिषदी आख्यान को इस संदर्भ में जोड़ते रहे | वास्तव में मिथक में अतीत का अंश तो रहता ही है |

मिथक का सीधा और सरल अर्थ है -एक कहानी ,एक कथा या काव्य | डॉ. नगेंद्र की दृष्टि में ""सामान्य रुप में मिथक का अर्थ है ऐसी परंपरागत कथा जिसका संबंध अति प्राकृतिक घटनाओं और भागों से होता है | मिथक मूलत: आदिम मानव के सम ष्टि मन की सृष्टि है जिसमें चेतन की अपेक्षा अचेतन प्रक्रिया का प्राधान्य रहता है |^3

डॉ. राम अवध द्विवेदी के अनुसार मिथक का जातीय जीवन से सीधा संबंध होता है और इससे जाति की रागात्मक कल्पनाओं की परिदृष्टि तथा गंभीर तथ्यों की प्राप्ति होती है | इसका जन्म आदिमानव और प्रकृति के साहचर्य के फलस्वरुप होगा |^4

साहित्य में मि थकों का प्रयोग एक स्वाभाविक प्रवृत्ति है |साहित्य में मिथक का प्रयोग साहित्य के आदिकाल से होता आया है |हमारी सर्वाधिक प्राचीन वैदिक साहित्य में भी मिथकों का प्रयोग वै दिक आख्यानों के रूप में मिलता है | पुरान मि थकों की खान है | रामायण की कथा के विषय में भी कहा जाता है कि व ह मिथकीय वैदिक आख्यान का रुपांतरण है |परवर्ती साहित्य में ही पुराने इसको कालू चल प्रयोग करने की अ विच्छिन्न परंपरा मिलती है |कालिदस कि विक्रमोर्वशी य नाटक का आधार वैदिक उर्वशी-पुरुरवा आख्यान है | मिथक बार-बार नए रुप में परवर्ती युग में पु न: रचित होता है और इसका परिणाम यह होता है कि मिथक पुराने प ड़ने के बदले नित नूतनता में मंडित होकर नये बने रह जाते हैं |

साहित्य की रचना में यदि मिथक का योगदान है तो साहित्य की आलोचना में भी मिथक को एक तत्व स्वीकार किया जा सकता है |लेकिन यह भी सच है कि किसी मिथकीय रचना के लिए भी केवल मि थकीय आलोचना एकमात्र आधार नहीं बन सकती है | जो यह समझते हैं कि किसी मिथकीय रचना की संपूर्ण आलोचना मिथकीय पद्धति से कर लेंगे वे या तो अति वादी हैं या भ्रांत | क्योंकि अत्यधिक मिथकीय कभी कोई रचना भाव से लेकर भाषा तक एक संपूर्ण धरातल पर केवल मिथकीय नहीं होती है| उसने मिथक से बाहर भी बहुत कुछ होता है और इस की समीक्षा मिथकीय पद्धति के सहारे नहीं हो सकती है |

साहित्य में मिथक का समावेश वस्तु-संरचना, पात्र-विधान ,कथा-रूढ़ि, बिम्ब- योजना , प्रती क विधान एवं रू प-संयोजन में हो सकता है |अतः रचना की मिथकीय आलोचना भाषा,भाव एवं क थ्य तीनों धरातलों पर संभ व है | कुल मिलाकर ये कहा जा सकता है कि साहि त्य की निर्मिति में द्रष्टा के रूप में मिथक का समावेश एक स हज प्रवृति है जो साहित्य और मिथक की स हधर्मिता प्रमाणित करती है | इसी तरह साहित्य की मिथकीय समीक्षा एक व्याख्यामूलक संख्या पद्धति है जो रचना में प्रयुक्त मिथक को केंद्र बनाकर रचना के मिथकीय विश्वास और उसकी अन्विती को स्पष्ट करती है |

सन्दर्भ सूची :

1. भारतीय पुरा इतिहास कोष, प्रथम संस्करण, 1978 ,पृष्ठ 1-7
2. डॉ. नामवर सिंह ,मिथक साहित्य: विविध संदर्भ ,पृ.11
3. डॉ. नगेंद्र, मिथक और साहित्य , पृ. 07
4. डॉ. राम अवध द्विवेदी, साहित्य सिद्धांत,पृ. 21

© RRIJM 2015, All Rights Reserved